छात्रों की विषय संदर्भ पाठ्य सहगामी क्रियाओं के विकास में उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन

मध्यप्रदेश के गुना जिले के शासकीय एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के संदर्भ में

शोधार्थी
श्याम सुन्दर श्रीवास्तव
जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर (म०प्र०)
मार्गदर्शक
डॉ० मनीषा पाण्डे (प्राचार्या)
युवा व्यावसायिक षिक्षण महाविद्यालय, गुना (म०प्र०)

शोध सार :

प्रस्तुत शोधपत्र छात्रों की विषय संदर्भ पाठ्य सहगामी क्रियाओं के विकास में उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन मध्यप्रदेश के गुना जिले के शासकीय एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के संदर्भ में से सम्बन्धित है। वर्तमान समय के विद्यालय बालक के सर्वागींण विकास के केन्द्र हैं। इसलिए अन्य विषयों की भांति पाठ्य सहगामी क्रियाएं उनका अभिन्न अंग हैं। खेल कूद के माध्यम से शारीरिक एवं मानसिक विकास को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। विद्यार्थियों के नेतृत्व कौशल एवं समूह में कार्य सामंजस्य के विकास में खेल–कूद एक महत्वपूर्ण उपकरण है। पाठ्य सहगामी क्रियाओं से बालक में आत्मविश्वास, निर्णय लेने की क्षमता एवं नेतृत्व सहयोग, आत्म नियंत्रण तथा त्याग की भावना का विकास होता है तथा उनमें आत्म विश्वास सुदृढ होता है और उनमें जीवन के प्रति आशावादी दृष्टिकोण का विकास होता है। शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य संदर्भ पाठ्य सहगामी क्रियाओं के विकास से शासकीय एवं अशासकीय छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन है।

मुख्य शब्द :

विषय

संदर्भ

पाठ्य

सहगामी क्रियाएं,

शैक्षिक उपलब्धि।

बालक के सर्वांगीण विकास हेतु निम्न पक्षों के विकास आवश्यक है– मानसिक, शारीरिक, मानवीय, सामाजिक, सांस्कृतिक और भावनात्मक विकास। पाठ्यक्रम के अन्तर्गत विद्यालय के विषयों के शिक्षण में छात्रों की ज्ञानात्मक पक्ष का विकास अधिक होता है

लेकिन भावनात्मक और क्रियात्मक पक्षों का विकास नहीं हो पाता। इसलिए उन पक्षों के विकास के लिए पाठ्य सहगामी क्रियाओं का सहारा लिया जाता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुसार आठ सहगामी क्रियाओं को पाठ्यक्रम में सम्मिलित कर लिया गया है और उनको पाठ्य सामग्री का महत्वपूर्ण अंग माना गया है। क्योंकि इन क्रियाओं के द्वारा बालक सर्वांगीण विकास होगा। बालक के अच्छे मानसिक विकास के लिए अच्छा स्वास्थ्य होना आवश्यक है।

उच्चतर और माध्यमिक विद्यालयों में पाठ्य सहगामी क्रियाएं छात्रों को अच्छा नागरिक बनने का प्रशिक्षण देती हैं। ऐसी गतिविधियां विद्यार्थियों को स्कूल में व्यस्त रखती हैं। पाठ्य सहगामी क्रियाएं शिक्षण में श्रेष्ठ स्थान रखती है और विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास में पूरा–पूरा योगदान देती हैं। इनमें शामिल होकर छात्र अपने गुणों की क्षमता से आगे निकल कर विकास करता है। इनमें आत्म निर्भरता आती है वे किसी भी कार्य को पूर्ण करने के लिए सक्षम बनते हैं।

पाठ्य सहगामी क्रियाएं :–

ऐसी क्रियाएं जो बालक के कक्षा अध्ययन से सम्बन्धित न हो लेकिन उनमें भाग लेकर विद्यार्थी अपना शारीरिक, सामाजिक एवं संवेगात्मक विकास का स्तर बढ़ाती हो पाठ्य सहगामी क्रियाएं कहलाती हैं। **मुनरो** के अनुसार ''पाठ्य सहगामी क्रियाओं का आशय विद्यालयों में पुस्तकीय अध्ययन के अतिरिक्त संस्थानों द्वारा प्रति स्थापित उन ऐच्छिक क्रियाओं के समायोजन से है जो विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए नितान्त आवश्यक है।''

पाठ्य सहगामी क्रियाओं का क्षेत्र बहुत विस्तृत है और प्रतिदिन इसका विस्तार होता जा रहा है। देश की प्रगति के साथ–साथ देशवासियों के जीवन में भी परिवर्तन आता जा रहा है। इन परिवर्तनों के परिणाम स्वरूप विभिन्न संस्थाएं शारीरिक शिक्षा की गतिविधियां आयोजित कर रही हैं। पाठ्य सहगामी क्रियाओं में निम्नलिखित क्रियाएं आती हैं–

1. **साहित्यिक क्रियाएं :** वाद–विवाद प्रतियोगिता, भाषण प्रतियोगिता, साहित्यिक परिषद, भाषा परिषद, विद्यालय पत्रिका।
2. **संगीत तथा नाट्य क्रियाएं :** नाटक, एंकाकी, लघु वार्तालाप, मूकाभिनय।

3. **खेल–कूद तथा शारीरिक व्यायाम :** कबड्डी, हॉकी, क्रिकेट, खो–खो, फुटबॉल, भांला फेंक आदि।
4. **शैक्षिक कियाएं :** इतिहास सम्बन्धी, भूगोल सम्बन्धी, गणित सम्बन्धी, विज्ञान सम्बन्धी, साहित्य सम्बन्धी।
5. **कला सम्बन्धी :** चित्रांकन, रेखाचित्र, व्यंग्यचित्र, संगीत, नृत्य।
6. **सैनिक शिक्षा :** बालचर, नेशनल केडिट कोर (NCC), राष्ट्रीय सेवा योजना (NSS)
7. **नैसर्गिक कियाएं :** पर्यटन, उद्यानिकी, बालसभा, बालमेला।
8. **सामाजिक तथा आर्थिक कियाएं :** समाज सेवा, सुरक्षा संस्थाएं, सहयोगी समितियां, रेड कॉस, प्राथमिक चिकित्सा।

शैक्षिक उपलब्धि :–

चार्ल्स ई. स्किनर के अनुसार ''शैक्षिक कार्य प्रक्रिया का अन्तिम परिणाम ही शैक्षिक उपलब्धि है। जो विद्यार्थियों को कार्य के बारे में अन्तिम जानकारी प्रदान करता है।''

उपलब्धि से तात्पर्य है। शिक्षण के किसी क्षेत्र में शिक्षक द्वारा प्रदत्त निर्देशों शिक्षण के द्वारा कितनी प्रकट होती है। जिस मात्रा में प्राप्त किए गए प्रशिक्षण के द्वारा ज्ञान एवं कौशल का उपार्जन करता है।

शैक्षिक उपलब्धि दो शब्दों से मिलकर बनी है – 'शैक्षिक+उपलब्धि'। जहां शैक्षिक का अर्थ 'शिक्षा के क्षैत्र में' तथा उपलब्धि का अर्थ होता है 'प्राप्ति'। जब हम शिक्षा के क्षेत्र में कोई प्राप्ति करते हैं तो इसे शैक्षिक उपलब्धि कहते हैं। उपलब्धि को निष्पत्ति, संप्राप्ति और ज्ञानार्जन आदि नामों से जाना जाता है।

पाठ्य सहगामी कियाओं द्वारा विद्याार्थियों को तो शैक्षिक उपलब्धि उच्च करने में सहायता मिलती है। विद्यार्थियों के व्यक्तित्व में निखार आता है। ये चुस्त–दुरुस्त रहकर मानसिक रूप से सुदृंढ होकर अध्ययन करते हैं। जिससे उनकी अध्ययन आदतें विकसित होती हैं ये अपने को स्फूर्तिवान महसूस करते हैं।

शोध के उद्देश्य :–

शोद्यार्थी ने अपने अध्ययन में निम्नलिखित शोध उद्देश्य रखें है–

1. अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में छात्रों की विषय संदर्भ पाठ्य सहगामी क्रियाओं के विकास से उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।
2. शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में छात्रों की विषय संदर्भित संदर्भ पाठ्य सहगामी क्रियाओं के विकास से उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।

परिकल्पनाएं :–

प्रस्तुत शोध हेतु निम्न परिकल्पनाओं का निर्माण किया गया है

1. अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों की विषय संदर्भ पाठ्य सहगामी क्रियाओं के विकास से उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पडता है।
2. शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों की विषय संदर्भ पाठ्य सहगामी क्रियाओं के विकास से उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पडता है।

शोध विधि :–

शोधार्थी ने प्रस्तुत शोध अध्ययन में वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया है।

न्यादर्श :–

प्रस्तुत अध्ययन में मध्यप्रदेश के गुना जिले के दो अशासकीय तथा दो शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत छात्रों में से यादृच्छिक प्रतिचयन विधि द्वारा 30 छात्र शासकीय और 30 छात्र अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के यानि कुल 60 छात्रों का चयन किया गया।

प्रदत्त संकलन के उपकरण :–

विषय संदर्भित पाठ्य सहगामी क्रियाओं हेतु स्वनिर्मित प्रश्नावली का निर्माण किया गया है। शैक्षिक उपलब्धि हेतु पिछले वर्ष का परीक्षा परिणाम लिया गया है।

ऑकडों का सांख्यिकीय विश्लेषण :–

ऑकड़ों के सांख्यिकीय विश्लेषण के लिए निम्नलिखित सांख्यिकीय गणनाओं का प्रयोग किया गया है–

1. मध्यमान
2. प्रामाणिक विचलन
3. टी–टेस्ट
4. सार्थकता स्तर

परिकल्पना–1 : अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों की विषय संदर्भ पाठ्य सहगामी क्रियाओं के विकास से उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पडता है।

तालिका–1

अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में छात्रों की विषय संदर्भ पाठ्य सहगामी क्रियाओं के विकास से उनकी शैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान, प्रामाणिक विचलन एवं टी–मान

<table>
<tr><th>समूह</th><th>मध्यमान</th><th>प्रामाणिक विचलन</th><th>स्वतंत्रता अंश</th><th colspan="2">प्रामाणिकता स्तर</th><th>टी–मान</th></tr>
<tr><td>अशासकीय छात्रों की विषय संदर्भ पाठ्य सहगामी क्रियाएं</td><td>97.16</td><td>14.94</td><td rowspan="2">58</td><td>0.01</td><td>2.68</td><td rowspan="2">10.32</td></tr>
<tr><td>अशासकीय छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि</td><td>67.50</td><td>5.90</td><td>0.05</td><td>2.01</td></tr>
</table>

स्रोत – प्राथमिक समंक

58 स्वतंत्रता अंश पर टी का प्रामाणिक मान 0.01 सार्थकता स्तर पर 2.68 होता है तथा 0.05 सार्थकता स्तर पर 2.01 होता है। गणना से प्राप्त टी का मान 10.32 इन दोनों से अधिक है। अतः सार्थक है अर्थात् परिकल्पना असत्य सिद्ध होती है।

अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों की विषय संदर्भ पाठ्य सहगामी क्रियाओं के विकास से उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव पडता है।

निष्कर्ष :–

अशासकीय छात्रों की संदर्भ पाठ्य सहगामी क्रियाओं से छात्रों का शारीरिक, मानसिक तथा संवेगात्मक विकास होता है। जिससे उनमें अनुशासन एवं एकाग्रता आती है तथा उनकी शैक्षिक उपलब्धि बढती है। इसलिए अशासकीय छात्रों की विषय संदर्भ पाठ्य सहगामी क्रियाओं के विकास का उनकी शैक्षिक उपलब्धि में योगदान है।

परिकल्पना–2 : शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों की विषय संदर्भ पाठ्य सहगामी क्रियाओं के विकास से उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पडता है।

तालिका–1

शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में छात्रों की विषय संदर्भ पाठ्य सहगामी क्रियाओं के विकास से उनकी शैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान, प्रामाणिक विचलन एवं टी–मान

<table>
<tr><th>समूह</th><th>मध्यमान</th><th>प्रामाणिक विचलन</th><th>स्वतंत्रता अंश</th><th colspan="2">प्रामाणिकता स्तर</th><th>टी–मान</th></tr>
<tr><td>शासकीय छात्रों की विषय संदर्भ पाठ्य सहगामी क्रियाएं</td><td>94.50</td><td>7.82</td><td rowspan="2">58</td><td>0.01</td><td>2.68</td><td rowspan="2">10.56</td></tr>
<tr><td>शासकीय छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि</td><td>71.76</td><td>8.80</td><td>0.05</td><td>2.01</td></tr>
</table>

स्रोत – प्राथमिक समंक

58 स्वतंत्रता अंश पर टी का प्रामाणिक मान 0.01 सार्थकता स्तर पर 2.68 होता है तथा 0.05 सार्थकता स्तर पर 2.01 होता है। गणना से प्राप्त टी का मान 10.56 इन दोनों से अधिक है। अतः सार्थक है अर्थात् परिकल्पना असत्य सिद्ध होती है।

शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों की विषय संदर्भ पाठ्य सहगामी क्रियाओं के विकास का शैक्षिक उपलब्धि में योगदान है।

निष्कर्ष :–

शासकीय छात्रों की संदर्भ पाठ्य सहगामी क्रियाओं से छात्रों का संपूर्ण, संतुलित, चतुर्मुखी, भौतिक, मानसिक तथा अध्यात्मिक विकास होता है। जिससे उनकी शैक्षिक उपलब्धि बढती है। इसलिए उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के शासकीय छात्रों की विषय संदर्भ पाठ्य सहगामी क्रियाओं के विकास का उनकी शैक्षिक उपलब्धि में योगदान है।

परिकल्पना 1 एवं 2 के अनुसार उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के शासकीय एवं आशासकीय छात्रों की विषय संदर्भ पाठ्य सहगामी क्रियाओं के विकास का उनकी शैक्षिक उपलब्धि में योगदान पाया जाता है।

सुझाव :–

1. पाठ्य सहगामी क्रियाओं में छात्रों को रूचि लेनी चाहिए जिससे उनमें अच्छे नागरिक बनने के गुण विकसित हो सकें।
2. पाठ्य सहगामी क्रियाओं में शामिल होकर छात्र अपने गुणों का विकास करके समाज में अपना स्थान बना सकता है।
3. पाठ्य सहगामी क्रियाओं को क्रियान्वित करने का कार्य मात्र एक व्यक्ति का नहीं है उनमें सभी लोगों का प्रोत्साहन एवं सहयोग अपेक्षित होता हे। अतः सम्बन्धित छात्रों के हित के लिए सहयोग करना चाहिए।
4. समय–समय पर पाठ्य सहगामी क्रियाएं कराना चाहिए। जिससे छात्रों में पारस्परिक सहभागिता का विकास होता है।

सन्दर्भ सूची :–

1. गुप्ता, एस.पी. 1997 सांख्यिकी विधियां, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद।
2. माथुर, एस. एस. 1973 शिक्षा दर्शन और मनोविज्ञान का शब्दकोश खण्ड–5, बाल विकास आमेगा पब्लिकेशन, नई दिल्ली।
3. चावला, अनीता 1989–90 उपलब्ध सुविधाओं का तुलनात्मक अध्ययन, जिला पंचकुला के सरकारी एवं गैरी–सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के पाठ्य सहगामी क्रियाओं का अध्ययन।
4. शर्मा, आर.ए. 2006 शिक्षा अनुसंधान, आर. लाल बुक डिपो, मेरठ।
5. दुबे, सत्यनारायण 2000 अध्यापक शिक्षा, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद।

Contributors Details:

शोधार्थी

श्याम सुन्दर श्रीवास्तव

जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर (म०प्र०)

मार्गदर्शक

डॉ० मनीषा पाण्डे (प्राचार्या)

युवा व्यावसायिक षिक्षण महाविद्यालय, गुना (म०प्र०)